Raga of the Month November, 2020

कल्याण रागांगके राग

कल्याण थाट यह एक विस्तृत रागों का समूह है. इसमें तीव्र मध्यमके अतिरिक्त बाकी सब स्वर शुध्द है. जब हम कल्याण थाटके रागों का विचार करते हैं, हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में पंडित भातखंडेजीने कल्याण थाटके प्रचलित रागोंका ३ विभागों में वर्गीकरण किया है, जैसे:

१ - पूर्ण या आरोहमें मध्यम तथा निषाद वर्जित राग- भूपाली , शुद्ध कल्याण, चंद्रकांत, जैतकल्याण

२ - आरोह अवरोह में तीव्र मध्यम लगने वाले राग – यमन, मालश्री, हिंडोल

३ - दोनों मध्यम लगनेवाले राग – हमीर, केदार, छायानट, कामोद, श्याम कल्याण, गौड़ सारंग, नंद, मारुबिहाग

राग यमनको कल्याण थाटका आश्रय राग माना जाता है, जिसमें हमें कल्याण रागांगकी सारी विशेषताएं मिलती है. यमन रागका दायरा बहुत विशाल है. नमूनेके तौरपे पहले हम यमन राग के विस्तार में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख सांगीतिक विशेषताओं का अभ्यास करेंगे.

वादी गांधार, संवादी निषाद

पूर्वांग प्रधान; गानेका समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

रागांग वाचक प्रमुख स्वर समूह

नि॒ रे ग रे सा, मं ध नि ध प, रे ग मं प, मं ध नि मं ध प, मं ध प सां, सां नि ध नि ध प, ध प मं ग , ग मं प$^{मंग}$रे , प मं ग रे ग, ग मं प रे रे सा.

अब हम राग यमन में प्रयुक्त होने वाले स्वरों के लगाव, परिमाण, न्यास आदि मार्गों से स्वरों का महत्व समझ लेंगे.

कण स्वर / स्पर्श स्वर ^{प}सा $^{नि॒}$सा ^{ग}सा ; $^{नि॒}$रे ^{ग}रे ^{प}रे ; $^{नि॒}$ग ^{प}ग ; ^{ध}मं ; ^{ग}प $^{मं}$प ; ^{प}नि ^{ध}नि $^{सां}$नि ;

षड्ज- क्षणिक अल्पत्व (नि॒ रे ग, रे नि॒ ध॒);

रिषभ - आरोह अवरोह में प्रयोग, अवरोह में न्यास बहुत्व;

गांधार- वादी एवं न्यास बहुत्व, (प$^{मंग}$रे) ऐसा मींडयुक्त प्रयोग करते समय गांधार स्वर का लंघन ;

तीव्र मध्यम- आरोह तथा अवरोह में अनाभ्यास के रूप में प्रयोग, (प$^{मंग}$रे, प$^{मं}$ग) ऐसे मींडयुक्त प्रयोग में लंघन;

पंचम- पूर्ण न्यास, अभ्यास बहुत्व, परंतु उत्तरांगके स्वर में विस्तार में (मं ध नि) ऐसा चलन प्रचलित होनेके कारण पंचम स्वर का बार-बार लंघन होता रहता है. उसी तरह (नि ध मं ग) इस प्रकार क्वचित पंचम का अवरोहात्मक लंघन किया जाता है;

धैवत - पुनरावृत्ति से दीर्घ बहुत्व (मं ध नि ध ध प); और (प प सां) इस प्रकार तार षड्जकी संगति में लंघन अल्पत्वके रूप में प्रयोग होता है;

निषाद- उत्तरांग क्षेत्रका महत्वपूर्ण स्वर, संवादी तथा न्यास बहुत्व, षड्जकी संगति में लंघन अल्पत्व;

अब हम (i) पंडित के जी गिंडेजीके लेक्चर डेमो और तीन वैशिष्ठ्यपूर्ण रागों के अंश सुनेंगे-

(ii) जैतकल्याण - पंडित जितेंद्र अभिषेकी;

(iii) राग मालश्री*- विवरण तथा गायन पंडित रामाश्रेय झा;

*(पं रामाश्रेय झा जीने मालश्री रागका मध्यम वर्जित निषाद युक्त प्रकारका विवरण किया है.)

(iv) छायानट - उस्ताद बड़े गुलाम अली खां

{ आभार प्रदर्शन - क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; अभिनव गीतांजली -पं रामाश्रेय झा, राजन पर्रीकर म्युझिक आर्काइव्ह , श्री अजय गिंडे , पं . यशवंत महाले }

०४-११-२०२०